कुछ एकता के बारे में

मु0 र0 आबिद

इस रंग बिरंगी दुनिया में जिधर आँख उठाकर देखें एक एकता (एका) ही हर ओर दिखायी देगा। यह चलती हुई हवाएँ हों, बहती हुई नदी का चंचल पानी हो, ठहरे हुए सागर का कुछ चुप्पी साधे पानी हो, धरती सूरज चाँद का रोज़ की आँख मिचौली हो, सबमें यही एकता दर्शन देती है। मानो यही एकता ही सृष्टि की आत्मा है। उस एक अकेले के बनाये हुए संसार में एका होना आचरज की बात क्या!! जैसे उसी ने सबको इसी एकता की आत्मा से बान्ध दिया है। यही उसकी माया है।

इस तरह एकता सबसे शुद्ध प्राकृतिक गुण है। यही एकता आन्त्रिक रूप में आकर सृष्टि का तन्त्र चलाती है और बाहरी आकार में आकर नागरिकता और सभ्यता का आधार बनता है और अनेकता में एकता (Unity in Diversity) का चमत्कार दिखाती है।

यह एकता हर जीवका के स्वभाव का प्रकृतिक झुकाव है। यह कोई समय की आवश्यकता नहीं, प्रकृति है। इस को जगाने या इसका महत्त्व जताने के लिए मीडिया (Media) का आभार लेने की क्या ज़रूरत? वहीं ''शुआए अमल'' को विशेषांक निकालने का क्या औचित्य? लेकिन बुरा हो राजनीति के झपान वाली छाया का जो सारे मानवजगत पर पड़ रही है। यह कोई आज की बात नहीं बल्कि उस समय की है जब सभ्यता ने घुटनियों चलना शुरु किया और राजनीति ने कुनमुनाना आरंभ किया। चुपके से देखिये तो यह खुली हुई सच्चाई है कि राजनीति के मदारी की अपनी कोई हैसियत ही नही होती:

कोई माने ही न, तो राजा की सत्ता क्या है
राज क्या चीज़ है, आदेश की माया क्या है

मान्यता भीक में पाये न तो राजा क्या है? और कोई किसी को अपने ही सर पर सवार क्यों करने लगा जब तक वह स्वयं किसी न किसी तरह कंगाल या दुर्बल न हो गया है (किया गया हो) और सबसे बढ़कर उसे यह कमी जता भी दी जाय। यह सारा खेल एकता को बिखरा कर ही हो सकता है, तभी राज हो सकता है। बाँटो और राज करो (Divide and Rule) की पुरानी घिसी पिटी चालू नीति और क्या है? एकता अपने में Discipline या स्वप्रशासन की ज़िम्मेवार है जो कभी निराज को सर उठाने, और (चौपट) राजा को बन्दरबाँट कर अपना उल्लू सीधा कर अन्धेर मचाने का अवसर ही न देगी। ऐसे में राजनीति का हव्वा बनाने की क्या पड़ी? एकता प्रकृति है। सच में या कल्पना में बने किसी दुश्मन का भी हव्वा खड़ा करना कोई सकारात्मक (Positive) ढंग नहीं। एकता प्रकृति में इतनी घुली मिली है कि एकता के दुश्मन भी एकता के ही नाम पर, एके के नारों के बल पर ही एकता का तोड़ करते हैं।

प्राकृतिक एकता को ही उभारने पालने पोसने की ज़रूरत है। अपनी कम समझ में, शुआए अमल के इत्तेहादे इस्लामी (इस्लामी एकता) के आशय में यही प्रकृतिक एकता है क्योंकि

इस्लाम प्रकृति का धर्म है। इस्लामी एकता = प्राकृतिक एकता (= का अर्थ बराबर) और

इस्लामी एकता ⇌ प्राकृतिक एकता

(इसका अर्थ है इस्लामी एकता प्राकृतिक एकता हो सकती है और प्राकृतिक एकता इस्लामी एकता हो सकती है।)

इस इस्लामी एकता के माने किसी एक जाति या समुदाय विशेष (चाहे वह मुस्लिम समुदाय ही क्यों न हो) के बीच एकता नहीं है। हाँ अगर एक समुदाय की एकता बड़ी प्राकृतिक एकता का ज़ीना बन रही है तो एक प्राकृतिक चरण के रूप में इसका स्वागत करने में जाता क्या है? बूँद–बूँद सागर होता है। घर में एक, घर–घर में एकता, महल्ले–महल्ले, गाँव–गाँव एकता, जत्थे–जत्थे, दल–दल, देश–देश एकता से ही व्यापक प्राकृतिक एकता बन बढ़ सकती है। इस एकता की इकाइयाँ घर का एका, दल का एका आदि हैं। इतना ध्यान रहे एक घर का एका, दूसरे घर से लड़ाई का बिगुल न बनने पाये, एक समूह, एक देश की एकता से दूसरे समूह या देश को भेदभाव का संदेश न जाने पाये। एक जगह का मेल–जोल किसी बड़े बिखराव की प्रस्तावना बनने न पाये। ऐसी प्राकृतिक एकता में किसी भी तरह किसी एक भी मनुष्य, घर, समुदाय, देश, समाज, आदि या और किसी बड़ी इकाई आदि को छोड़ा नहीं जा सकता। यहाँ तक इस प्राकृतिक एकता सृष्टि का कर्ण–कर्ण मिला होना चाहिए। इसका सीधा मतलब यह है कि इसमें सारे प्राकृतिक तन्त्रों का समावेश होना चाहिए। इसी एकता में किसी भी प्राकृतिक नियम को ठेस पहुँचने न देना चाहिए जैसे मानव एकता में पशु के अधिकार न छिनें, Ecosystem को चोट न लगे।

अन्त में एक बात कहना है। प्राकृतिक एकता को सच्चे अर्थों में मानकर सीधे कार्यात्मक प्रयास सकारात्मक रूप में शुरु कर देना चाहिए। इस सम्बन्ध में इस डर को न आने देना चाहिए कि बड़ी एकता के लिए 'अहं' की बलि देना होगी। एसा नहीं है पूरा ब्रह्माण्ड एक प्राकृतिक रिश्ते में पिरोया हुआ है। इसका एक–एक खण्ड अपने–अपने अपनेपन के साथ रहकर एक रहता है। अगर यह प्राकृतिक सम्बन्ध समझ में आ जाए तो एकता का बोलबाला न हो आश्चर्य!!

□□□

एक से एका

एक के नाम पे एका हो तो क्या अच्छा है!

मेल से दूजा भी अपना हो, तो क्या अच्छा है!

चैन का राज ही छाया हो, तो क्या अच्छा है!

बैर सब देस निकाला हो, तो क्या अच्छा है!

एक के सब हैं, सभी एक भी हो जाएँ कहीं!!

(मु0 र0 आबिद)